ए छल पेड़ थें देखाए बिना, ना छूटे याको बल।
उड़ाए देऊं जड़ पेड़ से, ज्यों उतर जाए अमल।। १८ ।।

जब तक इस माया के ब्रह्माण्ड की असल हक़ीकत नहीं बता देती, तब तक इसकी ताकत का ज्ञान (पता) नहीं मिलेगा (चलेगा), इसलिए इस ब्रह्माण्ड का ही प्रलय कर देती हूं, जिससे माया का सारा नशा ही उतर जाए।

अब देखो इन छल को, जो देखन आइयां तुम।
नूर जोस देऊं अंग में, जो कोई मोमिन मुस्लिम।। १९ ।।

हे मेरे सच्चे मोमिनो! अब तुम जिस खेल को देखने आए हो उस छल के खेल को देखो। मैं तुम्हारे अंग में जागृत बुद्धि और आवेश देती हूं।

मोमिन मांग्या मोले पें, सो भूल गैयां बातें मूल।
सो खेल देखाए पीछे याद देऊं, देखाए फुरमान रसूल।। २० ।।

हे मोमिनो! तुमने इसे धनी से मांगा था। उस मूल घर की बातें यहां आकर भूल गए हो। अब खेल दिखाकर रसूल के फरमान से तुम्हें याद दिलाऊंगी।

या छल में अनेक छल हैं, सो करूं सब जाहेर।
खोलूं कमाड कल कुलफ, अंतर मांहें बाहेर।। २१ ।।

इस माया के ब्रह्माण्ड में अनेक प्रकार के छल हैं। उन्हें अब मैं जाहिर कर देती हूं। अन्दर और बाहर के दरवाजे, ताले और इसे खोलने की युक्ति बता देती हूं (खोल देती हूं)।

|| प्रकरण || १२ || चौपाई || २६८ ||

सनन्ध–खेल के मोहोरों की

अब निरखो नीके कर, जो देखन आइयां तुम।
मांग्या खेल हिरस का, सो देखावें खसम।। १ ।।

हे मोमिनो! जिस खेल को तुम देखने के लिए आए हो, उसको अच्छी तरह से पहचानो। तुमने माया के खेल को देखने की चाहना की थी, उसे धनी दिखा रहे हैं।

भोम भली भरथ खंड की, जहां आई निध नेहेचल।
और सारी जिमी खारी, खारे जल मोह जल।। २ ।।

भरतखण्ड की भूमि भाग्यशाली है, जहां यह अखण्ड वाणी आई है। बाकी सारा संसार माया के मोह से भरा हुआ है।

इत बोए बिरिख होत है, ताको फल पावे सब कोए।
बीज जैसा फल तैसा, किया जो अपना सोए।। ३ ।।

भरतखण्ड की ही जमीन ऐसी है जहां बीज बोने से वृक्ष होता है, जिसका फल सभी को मिलता है। जैसा बीज होता है वैसा फल मिलता है, अर्थात् जैसी करनी वैसी भरनी।

इनमें जो ठौर अच्छी, जाको नाम नौतन।
जहां आए उदै हुई, नेहेचल बात वतन।। ४ ।।

इस सारे भरतखण्ड में जो अच्छी धरती है उसे नौतनपुरी कहते हैं। यहां पर अखण्ड मूल परमधाम की बात जाहिर हुई।

Nijanand App

तिन अच्छी थें भी ठौर अच्छी, जाए कहिए हिन्दुस्तान।
जहां मेंहेदी महंमद आए के, जाहेर किया फुरमान।।५।।

उससे भी अच्छा ठिकाना है जिसको हिन्दुस्तान (पद्मावती पुरी) कहते हैं। जहां मुहम्मद मेंहदी ने आकर कुरान के रहस्यों को जाहिर किया।

जोलों फुरमान ना जाहेर, तोलों मुख से ना निकसे दम।
अब इमाम के निज नूर से, देखाऊं खेल मुस्लिम।।६।।

जब तक कुरान के भेद जाहिर नहीं हुए तब तक कुरान के बारे में एक शब्द भी कोई नहीं बोला। अब इमाम मेंहदी के ज्ञान से अपने मोमिनों को खेल दिखाती हूं।

ए खेल तुम मांगिया, सो किया तुम कारन।
ए विध सब देखाए के, देखाऊं खसम वतन।।७।।

हे मोमिनो! तुमने खेल को मांगा है, इसे तुम्हारे लिए बनाया है। यह सब तुम्हें दिखाकर वतन और खसम के दर्शन कराऊंगी।

मोहोरे सब जुदे जुदे, जुदी जुदी मुख बान।
खेलें मन के भावते, सब आप अपनी तान।।८।।

इस खेल में सब अगुए (गुरुजन) जुदे-जुदे हैं और उनकी बोली अलग-अलग है। यह सब अपनी मनमानी भावना के अनुसार ही अपना राग अलापते हैं।

स्वांग काछे जुदे जुदे, और जुदे जुदे रूप रंग।
चले आप चित चाहते, और रहे भेले संग।।९।।

इसमें सब अपना-अपना भेष बनाते हैं, जिनके अलग-अलग रूप और रंग होते हैं। सभी अपनी-अपनी इच्छा के अनुसार मनमानी करते हैं और साथ में भी रहते हैं।

कई दुकान बाजार सेहेर, चौक चौवटे अनेक।
अनेक कसबी कसब करते, हाट पीठ बसेक।।१०।।

यहां कई तरह के शहर, बाजार, दुकान, चौहट्टे और चौक हैं, जिनमें अनेक तरह के धन्धा करने वाले धंधा करते हैं और कहीं-कहीं पर हाट और बाजार भी लगते हैं, अर्थात् यहां पर धर्मों के धाम बने हैं। धर्मों के क्षेत्र हैं। गादी (पीठ) हैं, मठ हैं और उनका प्रचार कर दुनियां को ठगते हैं। यहीं पर मेलों के रूप में हाट पीठ लगते हैं, जिनमें कई तरह की चमत्कारी लीला भी करते हैं।

भेख सारे बनाए के, करें हो हो कार।
कोई मिने आहार खाए, कोई खाए अहंकार।।११।।

इनमें तरह-तरह के भेष बनाकर अपनी ध्वजा पताका लेकर शोर मचाते हैं, जिनके कारण कोई धर्म को पेट का साधन बनाता है, कोई अपने अहंकार को दिखाता है।

विध विध के भेख काछें, सारे जान प्रवीन।
वरन चारों खेलें चित दे, नाही न कोई मत हीन।।१२।।

इसमें लोग तरह-तरह के भेष बनाकर अपने को होशियार ज्ञानी के रूप में जाहिर करते हैं। चारों वर्ण के लोग बड़े चित्त से खेलते हैं, धर्म प्रचार करते हैं। कोई अपने आप को ज्ञान में कम नहीं कहता।

Nijanand App

पढ़े चारों विद्या चौदे, हुए वरन विस्तार।
आप चंगी सब दुनियां, खेलत हैं नर नार।। १३ ।।

इसमें कई चारों वेदों के ज्ञाता और चौदह विद्याओं के जानने वाले हैं। स्वयं माया में मस्त होकर दुनियां वालों को माया में मग्न कर रखा है।

वरन सारे पसरे, लगे लोभें करें उपाए।
बिना अगनी पर जले, अंग काम क्रोध न माए।। १४ ।।

चारों वर्ण वाले अपना प्रसार करते हैं और उसमें लोभ के ही उपाय करते हैं। काम और क्रोध की अग्नि में जल रहे हैं जो हकीकत में अग्नि नहीं है।

नहीं जासों पेहेचान कबहूं, तासों करे सनमंध।
सगे सहोदरे मिलके, ले देवें मन के बंध।। १५ ।।

जिसके साथ कभी पहचान नहीं उससे शादी करते हैं। सब कुटुम्बी जन (बिरादरी वाले) मिलकर माया के बन्धन में बांध देते हैं।

सनमंध करते आप में, खुसाल हाल मगन।
केसर कसूंबे पेहेर के, देखलावें लोकन।। १६ ।।

जब शादी करते हैं तो बड़ी खुशी होती है और पीले-लाल वस्त्र पहनकर जगत को दिखाते हैं (बारात निकालते हैं)।

सिनगार करके तुरी चढ़े, कोई करे छाया छत्र।
कोई आगे नाटारंभ करे, कोई बजावे बाजंत्र।। १७ ।।

दूल्हा को श्रृंगार कराकर घोड़े पर बिठाते हैं तथा कोई छत्र लेकर साथ में चलते हैं। कई आगे नाचते हुए बाजे बजाते चलते हैं।

कोई बांध सीढ़ी आवे सामी, करे पोक पुकार।
विरह वेदना अंग न माए, पीटे मांहें बाजार।। १८ ।।

कई सामने से मुर्दे की अर्थी लेकर हाय-हाय करते चले आते हैं। उनके अंग में दु:ख नहीं समाता। बाजार में छाती पीटते हैं।

गाड़े जालें हाथ अपने, रुदन करें जल धार।
सनमंधी सब मिलके, टल वले नर नार।। १९ ।।

वह अपने ही हाथों से मुर्दे को गाड़ देते हैं या जला देते हैं। आंसुओं की धारा बहा-बहाकर रोते हैं। सगे सम्बन्धी सब मिलकर शोक मनाते हैं और दु:खी होते हैं।

जनम होवे काहू के, काहू के होए मरन।
हांसी हिरदे काहू के, काहू के सोक रुदन।। २० ।।

किसी के यहां जन्म होता है। किसी के यहां मरण हो रहा है। किसी के दिल में बड़ी खुशी है और कोई दु:ख से रो रहा है।

जर खरचें खाए गफलतें, करें बड़े दिमाक।
कीरत अपनी कराए के, पीछे होवें हलाक।। २१ ।।

कोई अपने को अपनी औकात से बड़ा दिखाने के लिए धन खर्च करते हैं और अपनी थोड़ी-सी महिमा कराकर पीछे दु:खी होते हैं।

Nijanand App

कोई किरपी कोई दाता, कोई मंगन केहेलाए।
किसी के अवगुन बोलें, किसी के गुन गाए।। २२ ।।

कोई कंजूस है, कोई दानी है। इसमें कोई मांगने वाले भिखारी कहलाते हैं। वह किसी के गुण गाते हैं, किसी की निन्दा करते हैं।

कोई मिने वेहेवारिए, कोई राने राज।
कई मिने रांक रलझलें, रोते फिरें अकाज।। २३ ।।

कोई आपस में सांसारिक व्यवहार करते हैं। कोई राणा है, कोई राजा है, कोई गरीब बनकर अकारण रोता है।

कई सोवें सोने के पलंग, कई ऊपर ढोलें वाए।
रहे खड़े आगे जी जी करें, ए खेल यों सोभाए।। २४ ।।

कोई सोने के पलंग पर सोते हैं। कोई ऊपर पंखे झलते हैं। कई आगे सेवा में खड़े 'जी जी' करते हैं। इस तरह से यह खेल की शोभा है।

कई बैठें सुखपाल में, कई दौड़े उचाए।
जलेब आगे जोर चले, ए खेल यों खेलाए।। २५ ।।

कोई पालकी में बैठते हैं। कोई पालकी उठाकर चलते हैं। कोई इनकी सेना में आगे-आगे चलते हैं। यह खेल इस तरह शोभायमान है।

कोई बैठे तखतरवा, आगे तुरी गज पाएदल।
अति बड़े बाजंत्र बाजहीं, जाने राज नेहेचल।। २६ ।।

कोई रथ पर बैठते हैं। उनके आगे हाथी-घोड़े, पैदल चलते हैं। बड़े-बड़े बाजे बजवाते हैं और समझते हैं कि हमारा राज्य अखण्ड है।

साम सामी करें फौजें, लरावें लोह अंग।
जिमी खावंद नाम धरावने, कई लर मरें अभंग।। २७ ।।

कई आमने सामने फौजें खड़ी करके तलवार-भालों से लड़ते हैं। वह अपने को राजा कहलाने के लिए लड़ मरते हैं तथा हाथ-पैर तोड़ लेते हैं।

कोई मिने होए कायर, छोड़ सरम भाग जाए।
कोई मारे कोई पकरे, कोई जावे आप बचाए।। २८ ।।

उनमें कायर होकर शर्म के मारे कोई पीछे भाग जाते हैं। कोई मारता है, कोई पकड़ता है तथा कोई अपने को बचाता है।

कोई जीते कोई हारे, काहू हरख काहू सोक।
जो तरफ सारी जीत आवे, ताए कहें पृथीपत लोक।। २९ ।।

कोई जीतता है तो कोई हारता है। किसी को हर्ष होता है तो किसी को दुःख। जो चारों तरफ जीत के आता है उसे पृथ्वीपति कहते हैं।

Nijanand App

कई करत ले कैद में, बांधत उलटे बंध।
मारते अरवाह काढ़हीं, ए खेल या सनंध।। ३० ।।

किसी को कैद में डालते हैं। कई उनके बन्धन में बंध जाते हैं, जिनको मार-मारकर प्राण निकालते हैं। यह खेल इस तरह का है।

जीते हरखे पौरसे, उमंग अंग न माए।
हारे सारे सोक पावें, तोबा तोबा करें जुबांए।। ३१ ।।

कोई जीतने पर खुशी मनाता है और उसके अंग में उमंग नहीं समाती है। हारे हुए लोग शोक मनाते हैं तथा तोबा-तोबा करते हैं।

कई फिरत हैं रोगिए, कई लूले टूटे अपंग।
कई मिने आंधले, यों होत खेलमें रंग।। ३२ ।।

कई रोगी घूमते हैं। कई लूले, टूटे, अपंग हैं। कई अन्धे हैं। इस तरह से खेल में कई रंग हैं।

कई उदर कारने, फिरत होत फजीत।
पवाड़े कई बिना हिसाबें, खेल होत या रीत।। ३३ ।।

कई अपने पेट के लिए मांगते फिरते हैं और अपनी फजीहत कराते हैं। इस तरह से खेल में बिना हिसाब के झंझट हैं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३०१ ।।

सनन्ध–खेल में खेल की

अब गुझ बताऊं खेल का, झूठे खेले कर सांच।
ए नीके देखो मोमिनों, ए जो रहे मजहबों रांच।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे मेरे प्यारे मोमिनो! इस खेल की गुझ (छिपी) बातें बताती हूं जिसमें लोग झूठ को सत समझ रहे हैं। यह तुम अब अच्छी तरह से धर्म, पन्थ, पैंडों में देखना।

मैं बताऊं या बिध, जासों जाहेर सब होए।
नहीं पटंतर दीन पैंडे, सो जुदे कर देऊं दोए।। २ ।।

मैं इस तरह से बताती हूं जिससे सब कुछ जाहिर हो जाए। धर्मों के अन्दर देखने में भेद दिखाई नहीं देता। वह मैं अलग-अलग करके बताती हूं।

इन खेल में जो खेल है, सो केहेत न आवे पार।
इन भेखों में भेख सोभहीं, सो कहूं नेक विचार।। ३ ।।

इस खेल में जो खेल हो रहा है, वह अपार है। यह कहनी से परे है। भेषों में तरह-तरह के भेष भी दिखाई पड़ते हैं। कुछ थोड़ा-सा उनके प्रति विचार सुनो।

कई बिना हिसाबे दयोहरे, जुदे जुदे अपने मजहब।
कई भांतों कई जिनसों, करत बंदगी सब।। ४ ।।

यहां बिना हिसाब मन्दिर बने हैं और अलग-अलग मजहब हैं। कई तरह से सब बन्दगी करते हैं।

Nijanand App